हे सद्गुरु माताजी सविंदर

तर्ज : क्या मिलिए ऐसे लोगों से

हे सद्गुरु माताजी सविंदर
हम पे तेरा उपकार है
कोटी - कोटी प्रणाम तुझको
नमन तुझे हर बार है | ||धृ ||

छत्तीस वर्ष तलक तू भी तो बाबाजी के साथ चली
पग- पग साथ दिया सद्गुरु का
गुरुमत के सांचे मे ढली
गुरु के मुताबिक तू ने बनाया
अपना हर किरदार है..
कोटि कोटि प्रणाम तुझको····· ||1||

अपनी सन्तानो से बढ़कर हर गुरुसिख पे प्यार लुटाया
तेरी ममता की छाया मे सुकून हम सब ने पाया
बेमिसाल है ममता तेरी अमूल्य तेरा प्यार है
कोटि कोटि प्रणाम तुझको····· ||2||

सद्गुरु रूप मे हुई जो प्रगट तू ने ना आराम किया
जन कल्याण मे तन से ऊपर उठकर तू ने काम किया
तेरे कारण बिखर न पाया, ये अपना परिवार है
कोटि कोटि प्रणाम तुझको····· ||3||

प्रभु रजा मे राजी रहने की कला सिखलाती रही

पूरे का है सब कुछ पूरा हमको ये समझाती रही

तूने कहा ये करता धर्ता आप स्वयम निरंकार है

कोटि कोटि प्रणाम तुझको····· ||4||

हमे सुदीक्षा जी के रूप मे सद्गुरु दे गयी जाते - जाते

तू ये इनायत जो न करती हम न कहीं के रह पाते

सदा जगत मे हमने करना अब इनका सत्कार है

कोटि कोटि प्रणाम तुझको····· ||5||